अफ्रीका में साझा व्यापार समझौता और इसके निहितार्थ

इस Editorial में The Hindu, Indian Express, Business Line आदि में प्रकाशित लेखों का विश्लेषण शामिल है। इस आलेख में अफ्रीका महाद्वीप में संपन्न हुए मुक्त व्यापार समझौते तथा उसके विभिन्न पक्षों की भी चर्चा की गई है तथा आवश्यकतानुसार यथास्थान टीम दृष्टि के इनपुट भी शामिल किये गए हैं।

संदर्भ

अफ्रीकी संघ का 12वाँ शिखर सम्मेलन नाइजर की राजधानी **नियामे** में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में अफ्रीका के देशों ने वस्तु एवं सेवा के लिये अफ्रीकी महाद्वीपीय मुक्त व्यापार समझौते (AfCFTA) पर हस्ताक्षर किये। इस समझौते के अंतर्गत सीमापारीय मुक्त व्यापार वर्ष 2020 के जुलाई माह से प्रारंभ हो जाएगा। समझौता लागू होने के बाद यह अफ्रीका को एक संयुक्त बाज़ार में बदल देगा। अफ्रीका की **1.2 बिलियन जनसंख्या** तथा **2.3 ट्रिलियन** आकार की संयुक्त जीडीपी इस समझौते के अंतर्गत होगी।

क्या है AfCFTA समझौता?

अफ्रीकी महाद्वीपीय मुक्त व्यापार समझौता (African Continental Free Trade Agreement) विश्व व्यापार संगठन के गठन के पश्चात् हुआ सबसे बड़ा मुक्त व्यापार समझौता (FTA) है। इस समझौते का मुख्य उद्देश्य वस्तुओं एवं सेवाओं के लिये एकल महाद्वीपीय बाज़ार स्थापित करना है इसमें व्यापार से जुड़े लोगों और श्रमिकों तथा निवेश का मुक्त रूप से आवागमन भी शामिल है। पिछले वर्ष अफ्रीका के 44 देशों ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किये थे तथा आधे देशों (22 देश) द्वारा सत्यापित होने के बाद इस समझौते को आगे बढ़ाया जाना था। कुछ समय पूर्व ही जाम्बिया ने 22वें देश के रूप में इस समझौते को सत्यापित कर दिया था इसके पश्चात् अफ्रीकी संघ की बैठक में इस समझौते को अंतिम सहमति भी दे दी गई।

//

चुनौतियाँ

समझौता लागू होने के पश्चात् यह विश्व का सबसे बड़ा मुक्त व्यापार क्षेत्र बन जाएगा। ज्ञात हो कि अफ्रीका वर्तमान में कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, साथ ही अफ्रीकी संघ की क्षमता को लेकर भी अतीत में प्रश्नचह्नि लगते रहे हैं। ऐसे में अनुमान लगाया जा रहा है कि इस समझौते को नम्निलखिति चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है-

- अफ्रीकी संघ का गठन वर्ष **1963** में हुआ था संघ के गठन के बाद से अफ्रीका के समक्ष कई चुनौतियाँ आती रही हैं जैसे- वऔिपनविशीकरण, वकिास की धीमी गति, इस्लामकि आतंकवाद, अरब स्प्रगि आदि। कति इनसे नपिटने तथा इनका समाधान खोजने में अफ्रीकी संघ प्रायः असफल रहा है। इससे पूर्व लीबिया के तानाशाह गद्दाफी ने भी अफ्रीकी संघ के साथ मलिकर अफ्रीकी यूनटिी परियोजना पर कार्य कयिा था कति यह योजना बुरी तरह असफल रही थी। अफ्रीकी संघ के पुराने अनुभव अधकि सकारात्मक नहीं रहे हैं, ऐसे में इस समझौते को ठीक से क्रियान्वति करने और सफल बनाने के लयि संघ को अधकि महत्त्वपूर्ण भूमकिा नभिानी होगी।
- अफ्रीका की वर्तमान परस्थितियिाँ गंभीर राजनीतकि संकट का सामना कर रही हैं। साथ ही अफ्रीका में सांगठनकि तथा अवसंरचना से जुड़ी हुई महत्त्वपूर्ण चुनौती भी होगी। अफ्रीका के कुछ देश जैसे-नाइजीरिया, दक्षणि अफ्रीका तथा मस्रि मलिकर अफ्रीका की 50 प्रतशित जीडीपी में योगदान करते हैं। इनके अतरिक्ति अन्य देश आर्थकि रूप से अत्यधकि कमज़ोर हैं। इन देशों में वनिर्मिाण क्षमता भी बहुत सीमति है। यह भी ध्यान देने योग्य है, अफ्रीका का 20 प्रतशित से भी कम व्यापार अफ्रीकी देशों के मध्य है। ऐसे में सीमापारीय व्यापार को इस समझौते के तहत अधकि गति दे पाना मुश्कलि होगा।
- विश्व की वर्तमान परस्थितियिाँ संरक्षणवाद को बढ़ावा दे रही हैं। यही संरक्षणवाद अमेरकिा-चीन के मध्य व्यापार तनाव, ब्रेक्ज़टि आदि के लयि ज़म्मिेदार है। संयुक्त राष्ट्र की रपिोर्ट के अनुसार, विश्व व्यापार की गति धीमी हो रही है, साथ ही वभिन्नि देश वैश्वीकरण से पीछे हट रहे हैं तथा वस्तु व्यापार की वृद्धि दर भी थम रही है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि अफ्रीका का विश्व व्यापार में सरिफ 3 प्रतशित ही हस्सिा है ऐसे में यह

समझौता वशि्व के रुझानों को कैसे नषि्प्रभावी कर सकता है, यह समझना महत्त्वपूर्ण होगा।

चुनौतियों से नपिटने के प्रयास

उपर्युक्त चुनौतियाँ इस समझौते (AfCFTA) के सफल क्रयिान्वयन के लयि बाधाएँ उत्पन्न करती हैं। कति यह समझौता चुनौतियों के साथ-साथ कई संभावनाओं को भी जन्म देता है। जो इन चुनौतियों को दूर करने में कारगर सद्धि हो सकती हैं। ध्यातव्य है कि वैश्वकि परस्थितियाँ व्यापार की दृष्टि से प्रतकिूल हैं और साथ ही सभी देश संरक्षणवादी नीतयिों पर बल दे रहे हैं, ऐसे में अफ्रीका का वकिास अन्य देशों के सहयोग की अपेक्षा स्वयं अफ्रीकी प्रयास से ही संभव है। इस दृष्टकिोण से यह समझौता अफ्रीका के आर्थकि वकिास के लयि महत्त्वपूर्ण है। यह समझौता अफ्रीका में स्थति 5 क्षेत्रीय आर्थकि समूहों के अनुभव के आधार पर आगे बढ़ाया जा सकता है। अफ्रीकी संघ प्रायः अपनी अक्षमता के लयि ही जाना जाता है इसलयि इतने बड़े समझौते के सफल कार्यान्वयन के लयि एक व्यापक रूप-रेखा बनानी होगी। साथ ही आरंभकि स्तर पर अधकि शुल्कों को कम करना, शुल्कों के अलावा व्यापार से संबंधति अन्य बाधाओं को दूर करना, आपूर्त सिृंखला तथा ववािद नविारण तंत्र को वकिसति करना आदकिार्यों को कयिा जा सकता है। ज्ञात हो कि वर्ष 2018 के अंत में मस्रि के काहरि में अंतर-अफ्रीकी व्यापार मेले का आयोजन कयिा गया था। इस मेले में 32 बलियिन डॉलर के व्यापार समझौते हुए थे। ऐसे ही आयोजनों को बल देकर वभिन्नि अफ्रीकी देशों को एक मंच पर लाया जा सकता है। अफ्रीका में अंतर्देशीय उद्योगों जैसे- डैनगोट (Dangote), MTN, इकोबैंक तथा ज़ूमयिा (Jumia) आदकिी महाद्वीपीय महत्त्वाकांक्षाएँ हैं अफ्रीका ऐसे उद्योगों को बल देकर अपनी वनिरि्माण एवं व्यापारकि क्षमता को बढ़ा सकता है। हालाँकि यिह भी सत्य है कि अफ्रीका में वत्तिीय नेटवर्क बहुत कमज़ोर है, वभिन्नि देशों के शुल्कों से संबंधति नयिम जटलि हैं। कति इस समस्या को मज़बूत राजनीतकि इच्छाशक्ति द्वारा दूर कयिा जा सकता है। इसके अतरिक्ति अफ्रीका में बड़ी मात्रा में सीमापारीय व्यापार अनौपचारकि रूप से होता है जसिसे नपिटना भी आवश्यक होगा।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, वर्तमान से वर्ष 2050 तक वशि्व की जनसंख्या में जो वृद्धि होगी इस वृद्धि का 50 प्रतशित अफ्रीका के उप-सहारा क्षेत्र से होने की संभावना है। यह एक बढ़े उपभोक्ता वर्ग होने की स्थति को भी दर्शाता है, इस परप्रिेक्ष्य में भी अफ्रीकी देशों के मध्य AfCFTA समय की मांग है।

अफ्रीका-अंध महाद्वीप से आर्थकि प्रगति की ओर

18वीं शताब्दी से पूर्व अफ्रीका वशि्व के लयि मुख्य रूप से अनजान था क्योंकि अफ्रीकी परस्थितियाँ कसिी भी आक्रमण एवं खोज की अनुमति नही देती थीं। इसी पृष्ठभूमि में यूरोपीय शक्तयिों ने अफ्रीका को अंध महाद्वीप की संज्ञा दी। जब अफ्रीका की मुख्य भूमि में औपनविशकि शक्तयिों का आगमन हुआ तो उसने दास प्रथा को जन्म दयिा। आगे चलकर वऔिपनविशीकरण के लयि भी अफ्रीका ने संघर्ष कयिा। नकिट अतीत में दक्षणि अफ्रीका एवं अन्य देशों ने नस्लवाद का भी दंश झेला है। वर्तमान में भी अफ्रीका मानव नरसंहार (रवांडा संघर्ष, दक्षणि सूडान आदि), तेल एवं खनजिों के लयि संघर्ष तथा इस्लामकि आतंकवाद को झेल रहा है। कति कुछ देश जैसे-नाइजीरयिा, दक्षणि अफ्रीका, मस्रि आदि ने आर्थकि प्रगति भी की है। अब अफ्रीकी संघ के नेतृत्व में अफ्रीका साझा बाज़ार की ओर बढ़ा है।

अफ्रीका को पश्चमिी देशों द्वारा खोजे जाने से पूर्व अफ्रीकी व्यापार मुख्य भूमि से ही होता था। टम्बिकटू, घाना, आदशि अबाबा, दार-एस-सलाम, काहरि आदि प्रमुख व्यापारकि केंद्र थे। इन केंद्रों से स्वर्ण, नमक, कीमती पत्थर, दासों आदि का व्यापार होता था। यूरोपीय उपनविशीकरण द्वारा इस व्यापारकि व्यवस्था को नष्ट कर दयिा गया। अब इस समझौते के माध्यम से अफ्रीका अपने इतहिास को दोहरा रहा है तथा अपने सफल व्यापारकि अतीत को ही पाने की कोशशि कर रहा है।

भारतीय दृष्टकिोण

अफ्रीका भारत का एक मज़बूत साझीदार है। भारत का वर्तमान में अफ्रीका के साथ लगभग 70 बलियिन डॉलर का वस्तु व्यापार है। यह भारत के वैश्वकि व्यापार का दसवाँ भाग है। यूरोपयिन संघ तथा चीन के बाद भारत अफ्रीका महाद्वीप का सबसे बढ़ा व्यापारकि साझीदार है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि वशि्व की बदलती परस्थितियों के कारण भारत का वैश्वकि नरि्यात स्थरि बना हुआ है, जबकि अफ्रीका के साथ नरि्यात में वृद्धि हो रही है। उदाहरण के लयि भारत का नाइजीरयिा के लयि नरि्यात पछिले वर्ष की अपेक्षा वर्ष 2018-19 में 33 प्रतशित बढ़ा है। अभी भी अफ्रीका में भारत की वस्तुओं की मांग बनी हुई है तथा इसके और बढ़ने की भी प्रबल संभावना है। वशिषकर खाद्य पदार्थों, तैयार उत्पादों (ऑटोमोबाइल, दवाओं, उपभोक्ता वस्तुओं) और आईटी तथा संचार सेवाओं, स्वास्थ्य देखभाल और शक्षिा, कौशल, प्रबंधन और बैंकगि तथा वत्तिीय सेवाएँ आदि।

भारत को इस समझौते के प्रभावों को समझने की कोशशि करनी चाहयि तथा इस समझौते को कसि प्रकार अपने हतिों के अनुरूप उपयोग कयिा जाए इस पर भी वचिार करना चाहयि। सैद्धांतकि रूप में अफ्रीका की अर्थव्यवस्था का पारदर्शी एवं औपचारकि होना भारतीय संदर्भ में हतिकारी है। भवषि्य में अफ्रीकी उत्पाद धीरे-धीरे भारतीय उत्पादों के लयि प्रतस्पिर्द्धी हो जाएंगे, इस बात को ध्यान में रखते हुए भारत वभिन्नि उत्पादों जनिकी मांग अफ्रीका के दृष्टकिोण से महत्त्वपूर्ण है, का उत्पादन अफ्रीका में ही कर सकता है। साथ ही इसके लयि स्थानीय उत्पादकों को भी साझीदार बनाया जा सकता है। यदि भारत इस समझौते का उपयोग सक्षम रूप से करने में सफल होता है, तो भारत के लयि यह समझौता FMCG उत्पादन, कनेक्टविटिी से संबंधति परयिोजनाओं तथा वत्तिीय अवसंरचना के नरि्माण में अवसरों के नए द्वार खोल सकता है। भारत ने इसी परप्रिेक्ष्य में अफ्रीकी संघ की बैठक, जो नाइजर की राजधानी नयिामे में संपन्न हुई, को 15 मलियिन डॉलर से वत्तिपोषति कयिा है। अगले प्रयास के रूप में भारत इस समझौते के लयि ज़रूरी ढाँचा-जैसे साझा वाह्य शुल्क, प्रतस्पिर्द्धी नीतयिाँ, बौद्धकि संपदा अधकिार एवं व्यापार से जुड़े लोगों के आवागमन से संबंधति नीतगित ढाँचे में अफ्रीकी संघ को सहयोग कर सकता है। भारत को अफ्रीका के ऐसे उद्योग, जो आने वाले समय में अफ्रीकी महाद्वीप के साझा बाज़ार (Common Market) में महत्त्वपूर्ण भूमकिा नभिा सकते है, को चह्निति करना होगा ताकि इन उद्योगों के साथ मलिकर भवषि्य में साझीदारी की जा सके। यह भी ध्यान देने योग्य है कि भारत का 3 मलियिन से अधकि डायस्पोरा अफ्रीका में मौज़ूद है, उसकी भूमकिा भी भारत के लयि महत्त्वपूर्ण हो सकती है। अंततः यदि यिह समझौता अपने लक्ष्यों को पाने में सफल होता है तो भवषि्य में भारत भी संपूर्ण अफ्रीका के साथ मुक्त व्यापार समझौते की ओर बढ़ सकता है। इस प्रकार का समझौता भारत और अफ्रीका दोनों के दृष्टकिोण से लाभदायक होगा।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि अफ्रीकी महाद्वीप में भारत ही एकमात्र व्यापारकि साझीदार नहीं है। चीन की स्थति अफ्रीका के संदर्भ में भारत से अधकि

मज़बूत है। भारत को चीन की चुनौती से नपिटने के रास्ते भी खोजने होंगे। भारत जापान के साथ मलिकर अफ्रीकी ग्रोथ कॉरडिोर के अंतर्गत चीन की चुनौती से नपिट सकता है, साथ ही ऐसे अफ्रीकी देश जो चीन की नीतयिों से असंतुष्ट हैं, उन देशों के साथ मलिकर भारत कार्य कर सकता है।

नष्किर्ष

अफ्रीकी देशों ने इस समझौते के माध्यम से अफ्रीका को एक साझा बाज़ार में बदलने का प्रयास कयिा है। यह अफ्रीका के वकिास की लयि आवश्यक एवं प्रगतशिील कदम है। कतिु अफ्रीका तथा अफ्रीकी संघ का अतीत वभिन्नि समस्याओं से जूझता रहा है, ऐसे में इस समझौते को क्रयिान्वति करना अफ्रीका के लयि एक कड़ी चुनौती होगी। इससे नपिटने के लयि मज़बूत राजनीतकि इच्छा शक्ति के साथ-साथ वभिन्नि संगठनों एवं देशों की वशिषज्ञता की भी आवश्यकता होगी। भारत के लयि भी यह आवश्यक होगा कि अफ्रीका के इस प्रयास में भागीदारी नभिाए ताकि चीन से मलिने वाली चुनौती का सामना कर सके।

प्रश्न: अफ़्रीकी महाद्वीपीय मुक्त व्यापार समझौता क्या है? इसको सफल बनाने में अफ्रीका के समक्ष आने वाली चुनौतियों का उल्लेख करें।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/a-shot-at-economic-logic